अध्याय 1: माता का अँचल

विषय-सूची

1 प्रश्नावली · 9 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1	प्रश्न-अभ्यास	9 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1 — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है?

हल

पाठ में भोलानाथ का अपने पिता (बाबू जी) से गहरा लगाव स्पष्ट दिखता है — वह पिता के साथ सोता, पूजा में बैठता, कंधे पर सवारी करता और उनके साथ खेलता था। फिर भी साँप देखकर भागते समय वह पिता की पुकार अनसुनी कर सीधे माँ के आँचल में जा छिपता है।

इसकी संभावित वजहें —

1. माँ का आँचल — सुरक्षा और ममता का प्रतीक: पिता के साथ बाहरी दुनिया में खेलना-घूमना था; माँ का आँचल घर की गहरी ममता और शरण का प्रतीक है। संकट में बच्चे को सबसे पहले उसी ममता की ज़रूरत होती है जो बिना शर्त सब कुछ छोड़कर उसे गले लगा ले।
2. पिता का साथ — खेल और साहस का: बाबू जी के साथ संबंध में उत्साह, खेल और बाहरी गतिविधियाँ थीं। माँ का संबंध अंदरूनी सुरक्षा, दुलार और दर्द-दूर करने से था। डर और घाव के समय बच्चा स्वाभाविक रूप से माँ की ओर जाता है।
3. 'मइयाँ' का तत्काल प्रेम-प्रतिक्रिया: मइयाँ ने भोलानाथ को काँपते देखते ही रो पड़ीं, सब काम छोड़ा, हल्दी लगाई, अंग भरकर दबाया और चूमा — यह निःस्वार्थ ममता पिता के प्रेम से अलग प्रकार की है।
4. माता-पिता की भूमिकाओं का अंतर: पिता जहाँ बच्चे को बाहरी दुनिया से परिचित कराते हैं, वहीं माँ आंतरिक संबल और सुरक्षा देती है। विपदा में यही आंतरिक सुरक्षा चाहिए होती है।

पाठ का अंत भी इसी भाव को पुष्ट करता है — 'हमने मइयाँ के आँचल की — प्रेम और शांति के चँदोवे की — छाया न छोड़ी।'

उत्तर: पिता के साथ भोलानाथ का संबंध बाहरी खेल और साहस का था; माँ का आँचल अंदरूनी ममता और सुरक्षा का प्रतीक था। विपदा में बच्चे को उसी निःस्वार्थ ममता की ज़रूरत होती है जो बिना शर्त सब छोड़कर गले लगा ले — इसीलिए भोलानाथ पिता की पुकार अनसुनी कर माँ की शरण ली।

प्रश्न 2

आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

हल

मइयाँ द्वारा तेल-उबटन लगाए जाने पर भोलानाथ रोता रहता है और बाबू जी की गोद में सिसकते-सिसकते बाहर आता है। लेकिन ज्यों ही उसे अपने साथियों का झुंड दिखता है, वह सिसकना भूलकर उनमें मिल जाता है।

इसके कारण —

1. बचपन में वर्तमान की प्रबलता: बच्चों की दुनिया पूरी तरह वर्तमान में जीती है। साथियों के खेल-तमाशे देखते ही पिछला दुख तत्काल भूल जाता है; नया आकर्षण मन पर छा जाता है।
2. साथियों का साहचर्य: बच्चे अपने हमजोलियों के साथ होकर स्वतंत्र और उत्साहित अनुभव करते हैं। झुंड देखना एक नई ऊर्जा जगाता है।
3. खेल की शक्ति: बच्चों के लिए खेल सबसे बड़ी चिकित्सा है। साथियों के साथ कूदना-दौड़ना सिसकने से बड़ा आनंद है।
4. रोना बाहरी कारण से था: तेल लगाने का दर्द और अनिच्छा से उत्पन्न रोना था, जो मन की गहरी पीड़ा नहीं थी। इसलिए एक नए आकर्षण के सामने वह जल्दी मिट जाता है।

पाठ में लिखा है — 'उन खेल के साथियों को देखते ही, सिसकना भूलकर, बाबू जी की गोद से उतर पड़ते और अपने हमजोलियों के दल में मिलकर तमाशे करने लग जाते थे।'

उत्तर: बचपन में वर्तमान सबसे बड़ा होता है। साथियों को देखते ही खेल का आकर्षण सिसकी से बड़ा हो जाता है; हमजोलियों का साहचर्य और नई गतिविधि पिछले छोटे दुख को तत्काल भुला देती है।

प्रश्न 4

भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

हल

भोलानाथ और उसके साथियों के खेल —

1. खेलने की सामग्री प्रकृति और घर की चीज़ों से बनती थी — धूल की मेड़, तिनकों का छप्पर, दातून के खंभे, दियासलाई की पेटियों के किवाड़, दीए की कड़ाही, कनस्तर का तंबूरा, ठीकरों के बटखरे, कसोरे का सूप।
2. खेल कल्पनाशील थे — मिठाई की दुकान, घरौंदा बनाना, बरात का जुलूस, खेती करना, कुश्ती।
3. सामग्री घर में उपलब्ध या प्राकृतिक चीज़ों से बनाई जाती थी; कोई बाज़ारू खिलौना नहीं।
4. खेल सामूहिक और सहयोगी थे — सारा झुंड मिलकर खेलता था।
5. खेल की जगह — चबूतरा, गली, बाग, टीला; खुले स्थान।

आज के खेल और सामग्री में अंतर —

1. आज के बच्चे प्लास्टिक-रबर के बाज़ारू खिलौने, वीडियो गेम, मोबाइल और टेलीविज़न से खेलते हैं।
2. खेल अधिकतर व्यक्तिगत या स्क्रीन-आधारित होते हैं; सामूहिक खेल घट गए हैं।
3. खेलने की जगह बाहर की बजाय घर के भीतर हो गई है।
4. कल्पनाशीलता और प्रकृति से जुड़ाव कम हो गया है।

निष्कर्ष — भोलानाथ के खेल स्वनिर्मित, प्रकृति से जुड़े और सामूहिक थे; आज के खेल बाज़ार-निर्मित, तकनीक-आधारित और अधिकतर एकाकी हैं।

उत्तर: भोलानाथ के खेल — धूल, तिनके, दातून, दियासलाई की पेटी जैसी घरेलू-प्राकृतिक चीज़ों से बनी सामग्री, कल्पनाशील सामूहिक खेल, खुले स्थान। आज के खेल — बाज़ारू प्लास्टिक खिलौने, वीडियो/मोबाइल गेम, स्क्रीन-आधारित, अधिकतर एकाकी। अंतर प्रकृति-जुड़ाव, कल्पनाशीलता और सामूहिकता में है।

प्रश्न 5

पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों?

हल

पाठ 'माता का अँचल' में अनेक मार्मिक प्रसंग हैं —

1. पिता का दुलार — पूजा-पाठ के समय बाबू जी का भोलानाथ को अपने साथ बिठाना, भभूत का तिलक लगाना, गंगा किनारे कंधे पर बैठाकर मछलियों को चारा देना, और लौटते में पेड़ों की डालों पर झूला झुलाना — यह प्रसंग पिता-पुत्र के गहरे प्रेम को दर्शाता है।
2. कुश्ती का प्रसंग — बाबू जी जान-बूझकर हार जाते और भोलानाथ उनकी छाती पर चढ़ जाता। भोलानाथ मूँछें उखाड़ने लगता तो वे हँसते-हँसते उसके हाथ छुड़ाकर चूम लेते — यह दृश्य अत्यंत सजीव और हृदयस्पर्शी है।
3. माँ का खिलाना — मइयाँ का दही-भात में तोता, मैना, कबूतर के नाम के कौर बनाकर खिलाना और भोलानाथ का उन्हें जल्दी-जल्दी 'उड़ा' देना — यह ममता भरा प्रसंग मन को छू जाता है।
4. साँप देखकर भागना और माँ की गोद में शरण — सारी देह लहूलुहान, पैरों के तलवे काँटों से छलनी — और उस हाल में माँ के आँचल में छिपना, माँ का रो पड़ना, हल्दी लगाना, बार-बार चूमना — यह अंतिम दृश्य सबसे अधिक हृदयस्पर्शी है।
5. पाठ का अंतिम वाक्य — 'हमने मइयाँ के आँचल की — प्रेम और शांति के चँदोवे की — छाया न छोड़ी' — यह पंक्ति माँ की ममता का सबसे सुंदर वर्णन है।

उत्तर: सबसे मार्मिक प्रसंग हैं — पिता का कंधे पर बिठाना और झूला झुलाना; जान-बूझकर हारकर बच्चे का उत्साह बढ़ाना; माँ का पक्षियों के नाम से कौर खिलाना; और अंत में साँप के डर से काँपते हुए भोलानाथ का माँ के आँचल में छिपना और माँ का सब छोड़कर रो पड़ना।

प्रश्न 6

इस उपन्यास अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं?

हल

पाठ में चित्रित तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति —

1. धार्मिक जीवन — पिता का तड़के उठकर पूजा-पाठ करना, राम-नाम लिखना, गंगा में आटे की गोलियाँ डालकर मछलियों को चारा देना।
2. सरल जीवनशैली — मिट्टी के बर्तन, दातून, हुक्का, मशाल की जगह दिया।
3. बच्चों के प्राकृतिक खेल — धूल-मिट्टी, तिनके, घरौंदा, बरात का नाटक, खेती का नाटक।
4. पाठशाला में गुरु जी की कठोर अनुशासन प्रणाली — मार-पीट सामान्य थी।
5. सामूहिक जीवन — पड़ोसी, बच्चों के झुंड, आपसी तीज-त्योहार और मेले।

6. महिलाओं की भूमिका — घर में अमनिया करना, खाना पकाना, तेल-उबटन लगाना।

आज की ग्रामीण संस्कृति में परिवर्तन —

1. तकनीक का प्रवेश — मोबाइल, टेलीविज़न और इंटरनेट गाँवों तक पहुँच गए हैं।
2. बच्चों के खेल बदले — बाज़ारू खिलौने और डिजिटल गेम ने मिट्टी के खेल की जगह ली।
3. पाठशाला में बदलाव — शारीरिक दंड कानूनन बंद है; शिक्षा का स्वरूप बदला है।
4. धार्मिक अनुष्ठान कम हुए — पूजा-पाठ की नियमितता घटी है।
5. महिलाओं की भूमिका विस्तृत — आज महिलाएँ घर के साथ बाहर भी काम करती हैं।
6. सामूहिकता घटी — एकाकी परिवार बढ़े; मेले-त्योहारों की भव्यता कम हुई।

निष्कर्ष — तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति प्रकृति-जुड़ाव, सामूहिकता और सरलता की संस्कृति थी; आज की ग्रामीण संस्कृति आधुनिकता और परंपरा के बीच संघर्ष में है।

उत्तर: तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति — धार्मिक अनुष्ठान, मिट्टी के खेल, हुक्का-दिया, गुरु जी की कठोर पाठशाला, सामूहिक जीवन। आज की ग्रामीण संस्कृति में — मोबाइल-टीवी का प्रवेश, बाज़ारू खेल, शारीरिक दंड बंद, महिलाओं की बाहरी भूमिका, सामूहिकता में कमी — परंपरा और आधुनिकता का मिश्रण है।

प्रश्न 8

यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

हल

पाठ में पिता (बाबू जी) का वात्सल्य —

1. पिता बचपन से ही भोलानाथ को अपने साथ रखते थे — पूजा पर बिठाना, तिलक लगाना, गंगा तट पर कंधे पर बैठाना, पेड़ों की डाल पर झूला झुलाना।
2. भोलानाथ को प्यार से 'भोलानाथ' कहकर पुकारना (असली नाम 'तारकेश्वरनाथ') — यह स्नेह का प्रतीक है।
3. कुश्ती में जान-बूझकर हार जाना ताकि बच्चा जीतने का आनंद उठाए; मूँछें नोंचने पर हाथ चूम लेना।
4. खाना खिलाते समय गोरस-भात अपने हाथ से सानकर देना।
5. गुरु जी से चिरौरी करके बच्चे को ले आना; रोते हुए भोलानाथ को गोद में लेकर पुचकारना।

पाठ में माँ (मइयाँ) का वात्सल्य —

1. तेल-उबटन लगाना, काजल की बिंदी, चोटी गूँथना, रंगीन कुरता-टोपी पहनाना — यह ममतामय श्रृंगार है।
2. दही-भात में तोता-मैना-मोर के नाम के कौर बनाकर खिलाना — खाना खिलाने की यह कला ममता का विशेष रूप है।
3. पिता के खिलाने के तरीके पर आपत्ति करना और स्वयं खिलाना — यह माँ का सुरक्षात्मक प्रेम है।
4. साँप के डर से काँपते भोलानाथ को देखकर तत्काल रो पड़ना, सब काम छोड़ना, हल्दी लगाना, अंग भरकर दबाना, बार-बार चूमना।
5. आँचल की छाया देना — पाठ के अंत में 'प्रेम और शांति के चँदोवे' की उपमा माँ की ममता का सर्वश्रेष्ठ वर्णन है।

दोनों का वात्सल्य अपने-अपने ढंग से है — पिता का वात्सल्य बाहरी दुनिया के संग खेल-खिलाड़ में व्यक्त होता है और माँ का आँतरिक ममता, सुरक्षा और दुलार में।

उत्तर: बाबू जी का वात्सल्य — कंधे पर बिठाना, झूला झुलाना, जान-बूझकर कुश्ती हारना, प्यार से 'भोलानाथ' पुकारना, गोद में लेकर पुचकारना। मइयाँ का वात्सल्य — तेल-उबटन-चोटी-काजल, पक्षियों के नाम से कौर खिलाना, संकट में सब छोड़कर रो पड़ना, हल्दी लगाना, आँचल में छिपाना। दोनों का प्रेम अलग ढंग से व्यक्त होता है पर समान गहराई का है।

प्रश्न 9

माता का अँचल शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

हल

'माता का अँचल' शीर्षक की उपयुक्तता —

1. पूरा पाठ यद्यपि बाबू जी के साथ भोलानाथ के अनुभवों से भरा है, तथापि इसका केंद्रीय भाव माँ की ममता है।
2. 'अँचल' शब्द सुरक्षा, ममता, शरण और स्नेह का प्रतीक है।
3. पाठ का सबसे मार्मिक और चरमबिंदु — जब भयभीत, लहूलुहान भोलानाथ माँ के आँचल में जा छिपता है और माँ सब काम छोड़ रो पड़ती है — यही पाठ का शीर्षक को उचित बनाता है।
4. पाठ के अंत में 'माँ के आँचल की — प्रेम और शांति के चँदोवे की — छाया' — यह वाक्य शीर्षक को पूरी तरह सार्थक करता है।
5. शीर्षक सुझाता है कि चाहे पिता का प्रेम कितना भी गहरा हो, संकट में बच्चे की अंतिम शरण माँ का आँचल ही होता है।

अन्य संभावित शीर्षक —

1. 'भोलानाथ की दुनिया' — क्योंकि अधिकांश पाठ बच्चे के खेल-नाटक और अनुभवों का है।
2. 'वात्सल्य की छाँव' — क्योंकि पाठ माता-पिता दोनों के वात्सल्य का वर्णन करता है।
3. 'बचपन के दिन' — क्योंकि पाठ ग्रामीण बचपन की मनोरम स्मृतियों का संकलन है।

इनमें 'माता का अँचल' सर्वाधिक उपयुक्त है क्योंकि यह पाठ के भावात्मक शीर्ष को पकड़ता है।

उत्तर: 'माता का अँचल' उपयुक्त है — पाठ का चरमबिंदु माँ की शरण में जाना है, 'अँचल' ममता और सुरक्षा का प्रतीक है और अंतिम पंक्ति इसे सार्थक करती है। अन्य संभावित शीर्षक: 'भोलानाथ की दुनिया', 'वात्सल्य की छाँव', 'बचपन के दिन'।

प्रश्न 10

बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

हल

पाठ में भोलानाथ अपने प्रेम को अनेक प्रकार से अभिव्यक्त करता है —

1. पिता से चिपकाव — पिता के साथ ही सोना, पूजा में बैठना, उनके कंधे पर बैठने की ज़िद, उनके साथ हर जगह जाना।
2. शरारत के रूप में प्रेम — बाबू जी की मूँछें नोंचना, उनकी छाती पर चढ़ जाना, उनके साथ कुश्ती करना — यह प्रेम की मासूम अभिव्यक्ति है।
3. लाड़ स्वीकार करना — खट्टा-मीठा चुम्मा देना, बनावटी गुस्सा करना फिर हँसना।

4. रोते समय माँ-पिता पर निर्भरता — गुरु जी की मार के बाद बाबू जी के कंधे पर रोना; संकट में माँ के आँचल में छिपना — यह भी प्रेम की अभिव्यक्ति है।
5. साथ रहने की चाहत — बाबू जी के साथ भोज में बैठना, साथ घर लौटना।

सामान्य रूप से —

बच्चे माता-पिता के प्रति अपना प्रेम इन तरीकों से व्यक्त करते हैं — उनसे लिपटना, उनके पास बैठने की ज़िद करना, उनकी बात सुनना, शरारत करके ध्यान खींचना, अपनी बात सुनाना, साथ खेलने की माँग करना, और संकट में उनकी शरण लेना।

बच्चों का प्रेम निःस्वार्थ और स्वाभाविक होता है — वे इसे शब्दों में कम, व्यवहार और शरीर-भाषा में अधिक व्यक्त करते हैं।

उत्तर: बच्चे माता-पिता से चिपकना, शरारत करना (मूँछें नोंचना, छाती पर चढ़ना), साथ रहने की ज़िद करना, संकट में उनकी शरण लेना, रोते समय उनपर निर्भर होना — इन सब तरीकों से प्रेम अभिव्यक्त करते हैं। बच्चों का प्रेम शब्दों से कम, व्यवहार में अधिक होता है।

प्रश्न 11

इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?

हल

पाठ में भोलानाथ और उसके साथियों की दुनिया —

1. खेल — मिठाई की दुकान, घरौंदा बनाना, बरात का नाटक, खेती का नाटक, कुश्ती — सब कल्पना और प्राकृतिक सामग्री से।
2. स्थान — चबूतरा, गली, बाग, मकई का खेत, नदी किनारा — खुली प्रकृति में।
3. समय — सुबह से शाम तक बाहर; घर में केवल खाना खाने या संकट में।
4. सामाजिकता — बड़े झुंड में खेलना; सब मिलकर नाटक करना।
5. तकनीक का अभाव — कोई बिजली, टेलीविज़न, मोबाइल नहीं।
6. प्रकृति से जुड़ाव — आँधी, बारिश, बिच्छू, साँप — प्रकृति जीवन का हिस्सा थी।

आज के बच्चों की दुनिया से अंतर —

1. स्थान — अधिकतर घर के भीतर; अपार्टमेंट में।
2. खेल — मोबाइल, वीडियो गेम, यूट्यूब।
3. सामग्री — बाज़ारू खिलौने, प्लास्टिक के सेट।
4. अकेलापन — झुंड में खेलने की जगह अकेले स्क्रीन।
5. प्रकृति से दूरी — आँधी-बारिश 'घर में रहो' का अवसर है, साहस का नहीं।
6. समय — पढ़ाई, ट्यूशन और कोचिंग में अधिक समय।

निष्कर्ष — भोलानाथ की दुनिया प्रकृति, कल्पना और सामूहिकता की दुनिया थी; आज की दुनिया तकनीक, बाज़ार और एकाकीपन की है।

उत्तर: भोलानाथ की दुनिया — खुली प्रकृति, धूल-मिट्टी-तिनकों के स्वनिर्मित खेल, सामूहिक झुंड, प्रकृति से सीधा जुड़ाव। आज की दुनिया — घर के भीतर, मोबाइल-वीडियो गेम, बाज़ारू खिलौने, एकाकी खेल, प्रकृति से दूरी। अंतर कल्पनाशीलता, सामूहिकता और प्रकृति-संपर्क में है।